

महंगी सब्जियों ने जायका बिगड़ा



अशोक भाटिया

बात लगभग एक महीने से बाजार का रुख लगातार महंगाई का बना हुआ है। बढ़ती महंगाई की वजह से समाज का ऐसा कोई तबका नहीं है जो इससे प्रभावित न हो रहा हो। लेकिन निम्न आय वर्ग के लोगों की तो जैसे कमर ही टूट गई है। वे अपने रोजमरा के खर्चों में जितने स्तरों पर कटौती करते हैं मुसीबत और भी बढ़ती जा रही है। फल व सब्जियों से लेकर खाने-पीने की प्रत्येक चीजों की बढ़ती कीमतों ने आम लोगों को तो परेशान किया ही है, सरकार तक की पेशानी पर बल ला दिया है। सब्जियों के दाम तो पकड से बाहर हो चुके हैं। कई शहरों में टामाटर दो सौ रुपए के आसपास पहुंच गया है। सब्जी के साथ फ्री में मिलने वाली धनिया व हरी मिर्च के दाम ने भी ताव खा लिया है। अदरक भी ढाई सौ रुपए किलो तक बिकने लगा है। अचरज की बात तो यह है कि इतनी महंगाई के बावजूद इसके खरीदार भी कम नहीं हैं। बहरहाल, इस समस्या से निपटने के लिए सरकार की ओर से एक एक सामाजिक योजना है जिसके अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय व्यापारी द्वारा उत्तरांश के लिए वित्तीय सहायता दी जाएगी।

कई स्तर पर प्रयास किए गए हैं, एक भा महाराष्ट्र के आंकड़े अख्ख-मिचौली खेलने से बाज नहीं आ रहे हैं। बाजार में उथल-पुथल के बीच कीमतों में तेजी के लिए और भी कई कारक जिम्मेदार हैं जिसका सीधा असर जरूरी वस्तुओं की खुदारा कीमतों पर पड़ रहा है। अब वाणिज्य मंत्रालय की ओर से जारी ताजा आंकड़ों में थोक महंगाई का रुख नीचे की तरफ हुआ है। आंकड़े के मुताबिक, जून लगातार तीसरा महीना है, जब थोक महंगाई शून्य से नीचे आ गई। खाने-पीने की वस्तुओं, रुईधन, बस्त्रों और निर्मित उत्पादों की कीमतों में गिरावट की वजह से थोक महंगाई में यह गिरावट शून्य से 4.12 फीसद नीचे पहुंच गई है। इसे पिछले आठ साल में थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित महंगाई का सबसे निचला स्तर माना जा रहा है। इससे पहले मई में यह शून्य से 3.38 फीसद और अप्रैल में शून्य से 0.92 फीसद नीचे रहा था। थोक महंगाई की दर में कमी के बाद उम्मीद की जाती है कि खुदारा कीमतों में भी नरमी आएगी। लेकिन कई बार देखा गया है कि थोक महंगाई में गिरावट के बावजूद खुदारा मूल्य पर उसका कोई असर नहीं पड़ता है। मसलन थोक महंगाई में तो नरमी का रुख देखा गया

आर.के. सिन्हा

यूपी में विगत मई महीने में पंचायत चुनाव हुए और पश्चिम बंगाल में इसी जुलाई में। दोनों ही देश के आवादी और क्षेत्रफल के लिहाज से खास राज्य हैं। परं पंचायत चुनावों के दौरान जहां यूपी में पूर्ण शांति रही, वहीं पश्चिम बंगाल ने हिंसा, आगजनी और निर्मम हत्याएं होती देखीं। राजनीतिक एकाधिकार के लिए पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा की संस्कृति अन्य भारतीय राज्यों की तुलना में कहीं अधिक विट्ठल रूप धारण कर गई है। देखा जा रहा है कि राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं के बीच हिंसक झड़पों की संस्कृति, खासतौर से ग्रामीण क्षेत्रों में हाल के कुछ वर्षों में यहां कुछ ज्यादा ही फली-फूली है। पश्चिम बंगाल में हाल ही में द्वापंचायत चुनाव के दौरान खबर-खबरों

सावधानी से टाले जा सकते हैं ये हादसे!



मनोज कुमार अग्रवाल

उत्तर प्रदेश के उत्तर रुग्य मंत्री नाम दित्यना था। गोगी की खरेख में अवंड़ यात्रा नाफी हद तक कुशल संपन्न मैरठ में एक दियों की मौत गया। जबकि घंटे पहले पर शुकवार पर निकले खास अहसास क्योंकि स्वयं पर पुष्प वर्षा से प्रशासन, अफसरों ने दियों पर फूल बरनावा तक त वर्षा की। चिनाया ते जिससे इसमें करंट उत्तर आया। मौके पर चीख-पुकार मच गई। कुछ लोगों ने घायलों को ट्रॉली से अलग किया। सचना पर डीएम और एसएसपी मौके पर पहुंचे। घायलों को गंगानगर के आईआईएसटी, मेरठ के आनंद अस्पताल और मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। घटना से गुस्साए गांववालों ने जाम लगा दिया। कई थानों की फोर्स मौके पर पहुंच गई है। सीओ देवेश प्रताप चौहान ने बताया कि युवकों ने जेर्ड से कहा था कि वो कांवड़ लेकर आ रहे हैं। 11 केवी की लाइन से बिजली सप्लाई बंद कर दी जाए। बताया जा रहा है कि बिजली विभाग के जेर्ड ने लाइन बंद होने की सूचना दी थी इसके बाद वे गांव में आए, लेकिन लाइन चाल थी। आपसी समन्वय में कभी इस हादसे की बजह बनी। आप ने तब दैंत्य दिलेंगे।

दादा याना ममता बनजा का सरकार सत्ता का हनक को बरकरार रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकती है। लेकिन, ममत बनजी भूल जाती है कि कोई भी सरकार कल्याणकारी राज्य के तौर पर काम करती है और कानून का राज उसकी एक अहम शर्त होती है। आज भले ही पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस पार्टी (टीएमसी) पंचायत चुनाव में जीत का जश्न मना रही है, लेकिन इस जश्न में उन परिवारों की चीत्कार का कोई मायने नहीं है जिनके परिजन चुनावी हिंसा के शिकार हो गए। निश्चित रूप से खून से सने पोलिंग बूथ, टूटी मतपेटियां और बुलेट-बम की खाफनाक तस्वीरें भी जीत के जश्न में कहीं खो जाएंगी, क्योंकि, यह सब बंगाल की नियति से जुड़ गई है। शायद इसीलिए आम लोगों के बीच उत्तर प्रदेश में शांतिपूर्ण चुनाव की चर्चा जोर पकड़ने लगी है। यूपी में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरपरस्ती में हुए पंचायत चुनाव शांतिपूर्ण तरीके संपन्न हुए थे। इसलिए कहने वाले कह रहे हैं कि ममता बनजी को यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से चुनाव प्रबंधन सीखना चाहिए।

एनडीए का सिल्वर जुबली, बदलते साथियों के साथ अटल

यह कवायद रंग लाई और 1998 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को टक्कर देने के लिए अटल विहारी वाजपेयी ने उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम के कई दलों का ऐसा संगम बनाया कि कांग्रेस और तीसरे मोर्चे का सफाया हो गया और तेतुगु देशम पार्टी के बाहरी समर्थन से केंद्र में अटलजी की सरकार बन गयी। हालांकि एनडीए सहयोगी अन्नादमुक की नेता जयललिता की ओर से समर्थन वापस लिये जाने के कारण अटलजी की सरकार 13 महीने में ही गिर गयी लेकिन 1999 में हुए लोकसभा चुनावों में एनडीए एक बार फिर सत्ता में पहले से ज्यादा ताकत के साथ लौटा। हालांकि निर्धारित अवधि से छह महीने पहले कराये गये लोकसभा चुनावों में एनडीए की हार हुई और कांग्रेस के नेतृत्व वाला संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सत्ता में आया। यूपीए ने 2004 से 2014 तक राज किया। उसके बाद मई 2014 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए एक बार फिर सत्ता में लौटा और तबसे केंद्र तथा विभिन्न राज्यों में इसकी सरकार चल रही है। एनडीए 25 साल पूरे कर रहा है, सिफर यही इसकी उपलब्धि नहीं है।

एनडीए की उपलब्धि यह भी है कि इसने सबसे

महात्मा गांधी के अनुसार यह जो है कि इरान राष्ट्र का है वह उत्तरी भारत में राष्ट्रियता के लिए बहुत अच्छी विद्या है।

गयी है। एनडीए की शुरुआत से ही घटक रही समता पार्टी जोकि बाद में जनता दल युनाइटेड कहलाई, वह भी एनडीए में आती जाती रहती है। फिलहाल वह इस गठबंधन से बाहर है। एनडीए के स्वरूप की बात करें तो इसके तहत गठबंधन नेताओं की जो समिति बनी थी, वह सीटों और पदों के बंटवारे से लेकर संसद में उठाये जाने वाले मुद्दों और विरोधियों के हमलों से बचाव की रणनीति बनाती है। अतीत में कई बार कुछ निर्णयों में विचारधाराएं आड़े आईं तो बहुमत के आधार पर फैसले भी लिये गये। एनडीए के संयोजकों की बात करें तो अटल बिहारी वाजपेयी इसके संस्थापक संयोजक थे।

सर्सी (मूपनार) और यूपीपीएल शामिल हैं। इसके बावा उत्तर प्रदेश में निषाद राज पार्टी और कुछ क्षेत्रीय दलों का भाजपा को समर्थन हासिल है। तरह ह की स्थिति कुछ अन्य राज्यों में भी है। इसके बावा 2016 में पूर्वोत्तर में एनडीए के तहत बनाये नौर्थ ईस्ट डेर्मीक्रेटिक एलायंस में भाजपा के बावा कई क्षेत्रीय दल शामिल हैं। यह गठबंधन तर के अधिकांश राज्यों में सरकार चला रहा है। योगी की सफलताओं की बात करें तो इसने 1998, 19, 2014 और 2019 का लोकसभा चुनाव जीतकर अटल बिहारी वाजपेयी और नरेंद्र मोदी के बाव में केंद्र में सिर्फ सरकार ही नहीं दी है बल्क बार उसके राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार- डॉ. नीती अब्दुल कलाम, रामनाथ कोविंद और द्वौपदी जीती हैं तो इसके अलावा तीन बार ही एनडीए के राष्ट्रपति उम्मीदवार- भैरों सिंह शेखावत, एम. पा नायडू और जगदीप धनखड़ की जीत हुई। योगी ने लालकृष्ण आडवाणी के रूप में देश को उपप्रधानमंत्री भी दिया है।

टलजा आर मादा के नतृत्व में कद्र में एनडाए जीत में फर्क यह रहा कि अटलजी को जहाँ दोनों प्रतिवंश वी सामग्री चलाई पढ़ी बहीं सोची के

गठबंधन का सरकार चलाना पड़ा वहाँ मादा के बव में भाजपा ने अपने दम पर बहुमत हासिल किया उन गठबंधन धर्म निभाते हुए सहयोगी दलों को भी नंदल में स्थान दिया। भजपा के नेतृत्व वाले एनडीए शासित राज्यों के अर्मस्ट्रियों की बात करें तो अरुणाचल प्रदेश में पेमा च, असम में हिमंत बिस्व सरमा, गोवा में प्रमोद त, गुजरात में भूपेंद्र पटेल, हरियाणा में मनोहर खट्टर, मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान, राष्ट्र भ्राता में एकनाथ शिंदे, मणिपुर में एन. बिरेन , मेघालय में कोनराड संगमा, नगालैंड में यूरियो, पुडुचेरी में एन. रंगासामी, सिक्किम में सिंह तमांग, त्रिपुरा में माणिक साहा, उत्तर भारत में योगी आदित्यनाथ और उत्तराखण्ड में रर सिंह धामी शामिल हैं।

ਪੰਚਾਤ ਹੁਨਾਵ ਪ੍ਰਬੰਧਨ - ਦੀਦੀ ਜਾ ਸੀਖੋ ਧੋਗੀ ਸੇ



आर.के.सिन्हा

दौरान जहा यूपा म पूँजी
शांति रही, वहीं पश्चिम बंगाल ने
हिंसा, आगजनी और निर्मल हत्याएं होती देखीं।
राजनीतिक एकाधिकार के लिए पश्चिम बंगाल
में राजनीतिक हिंसा की संस्कृति अन्य भारतीय
राज्यों की तुलना में कहीं अधिक विवृद्ध रूप
धारण कर गई है। देखा जा रहा है कि
राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं के बीच
हिंसक झड़पों की संस्कृति, खासतौर से ग्रामीण
क्षेत्रों में हाल के कुछ वर्षों में यहां कुछ ज्यादा
ही फली-फली है। पश्चिम बंगाल में हाल ही
में हुए पंचायत चुनाव के दौरान खूब-खराब
हुआ जिसमें तीन दर्जन से अधिक राजनीतिक
हत्याएं हुई हैं। इस बात की पुष्टि करता है कि
दीदी यानी ममत बनर्जी की सरकार सत्ता की
हनक को बरकरार रखने के लिए किसी भी हद
तक जा सकती है। लेकिन, ममत बनर्जी भूल
जाती है कि कोई भी सरकार कल्याणकारी राज्य
के तौर पर काम करती है और कानून का राज
उसकी एक अहम शर्त होती है। आज भले ही
पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस पार्टी
(टीएमसी) पंचायत चुनाव में जीत का जश्न
मना रही है, लेकिन इस जश्न में उन परिवारों
की चीत्कार का कोई मायने नहीं है जिनके
परिजन चुनावी हिंसा के शिकार हो गए।
निश्चित रूप से खन से सने पोलिंग बथ टर्टी

गम मांचा एक ताकतवर दल के रूप में है, जिसके कारण राजनीतिक हिंसा की विभिन्न स्थापित हुई। वाम मोर्चे ने जैसे-जैसे इस के प्रभुत्व को चुनौती देना शुरू किया, दलों के कार्यकर्ताओं के बीच हिंसक और रोजमरा की घटनाएं बन गईं। 17 मार्च 2010 को पूर्व बर्धमान जिले में हुए सैनबाड़ी हार, जहां कांग्रेस कार्यकर्ताओं की हत्या हुई और 27 फरवरी 1971 को कोलकाता गॉल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक के अध्यक्ष बसु की हत्या से जुड़ी यादें आज भी ताजा हैं। इन घटनाओं ने राजनीतिक सत्ता को विरार रखने के लिए 'बंदूक संस्कृति' की शरण ली। 1998 में ममता बनर्जी की ओर से उत्तरी के गठन के बाद वर्चस्व की लड़ाई ने कान नया दौर शुरू किया। उत्तरी साल हुए, जब चुनावों के दौरान कई इलाकों में भारी हुई। केंद्रीय गृह मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, 2018 के पंचायत चुनाव के दौरान राजनीतिक हत्याएं हुईं थीं। नेशनल क्राइम रिपोर्ट ब्यूरो (एनसीआरबी) की एक रिपोर्ट में बताया गया उल्लेख भी है कि साल 2010 से 2019 के बीच पश्चिम बंगाल में 161 राजनीतिक हत्याएं हुईं और पश्चिम बंगाल इस दौरान में पूरे देश में पहले स्थान पर रहा। यह पहले 2003 के पंचायत इलेक्शन चुनाव तक बात करें तो तब करीब 80 मौतें हुईं थीं। 2018 में 45 मौतें। ताजा चुनाव में 36 लोगों की मौत की खबर है। हालांकि यह अकारिक आंकड़ा नहीं है। सरकार हमेशा की संख्या कम करके बताती रहती है। विकास की मौतें होती हैं।

क्यों बन गया है नजीर?

डॉ सत्यवान सौरभ

क्यों पतियों को बीवी 'नो-जॉब' पसंद है ?



डॉ सत्यवान सौरभ

तृसुत्तात्मक वजह में उमीद भी की जाती है। यही एक वजह भी है कि ससुराल वालों की वजह से उसका करियर सेकेंड्री बन जाता है। ऐसे में वह जब तक अपनी वर्क लाइफ और पर्सनल लाइफ में तालमेल बिठा पाती है, तो ठीक वरना उसे अपने काम से हाथ धोना ही पड़ता है। वैसे आज भी हमारे देश में शादी एक बड़ा मुद्दा है नौकरी नहीं। लड़कियों को पढ़ना-लिखना तक तो ठीक है लेकिन ज्यादातर लोगों को वर्किंग वुमन नहीं चाहिए। कई परिवार पढ़ी लिखी बहू लाना तो चाहते हैं पर वो शादी के बाद उनके नौकरी करने के पक्ष में नहीं होते। तर्क दिया जाता है कि उनका परिवार संपन्न है, नौकरी की क्या ज़रूरत है। ये भी समझा जाता है कि नौकरी करने वाली लड़की को घर संभालने का कम वक्त मिलेगा, जिससे घर के कामों में दिक्कत आएंगी। क्यूंकि भारत के ज़्यादातर हिस्सों में आम धारणा यही है कि घर संभालना महिलाओं का काम है। पितृसृत्ता के गुलाम लोगों को लगता है कि नौकरी करने अगर बहू घर के बाहर जाएंगी, उसके हाथ में पैसे होंगे तो वो घर वालों को कुछ समझेंगी नहीं। इसके पीछे नी शान्ति देती है कि उन्हीं

आज से शुरू होगा मलबाल

भूलकर भी ना करें तुलसी से जुड़ी 5 गलतियां



मलमास में भगवान् विष्णु की पूजा का विशेष महत्व है। इस बार सावन के महीने में ही अधिक मास यानी मलमास पड़ रहा है, जो हर

ਗੌਤਮ ਬਲਦ ਦੇ ਜਾਣੀ ਵਾਲੇ

गौतम बुद्ध से जुड़ी बातें

निम्नलिखित हैं:
परिवर्तन की सत्यता: गौतम बुद्ध ने सत्यता की एक महत्वपूर्ण बात प्रदान की, और वह है कि परिवर्तन निश्चित है। उन्होंने सिद्ध किया कि हम सभी अपने जीवन में परिवर्तन कर सकते हैं और अपने दुखों का समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

जन्म और बाल्यकालः गौतम बुद्ध ने लुम्बिनी नगर में 563 ईसा पूर्व में जन्म लिया था। उनके पिता का नाम शुद्धोधन था और माता का नाम माया देवी था। उनका जीवन शांतिपूर्ण और समृद्ध था जहां उन्हें सभी आवश्यक सुख-सुविधाएं प्रदान की गईं।

संवेदनशील होना चाहिए और उन्हें सहायता करने की क्षमता रखनी चाहिए।

संयम की महत्वता: गौतम बुद्ध ने संयम की महत्वता को प्रमुखता दी। उन्होंने बताया कि हमें अपनी मनोवृत्ति को नियंत्रित करना चाहिए और ईदियों की

बोधिसत्त्वः: गौतम बुद्ध को जीवन की सत्यता और दुःख की पहचान का अनुभव हुआ जब उन्होंने बाहर जाकर मानवता के सारे दुःखों को देखा। यही संदेश उन्हें बोधिसत्त्व की ओर प्रेरित किया, जिसमें उन्होंने आत्म-परिवर्तन के माध्यम से सत्यता का पाठ प्रदान किया।

बोधगया में बोध वृक्षः गौतम बुद्ध ने बोधगया में एक विशेष बोध वृक्ष के नीचे निवास किया था और वहीं परमात्मा का अनुभव किया था। इसी स्थान पर उन्होंने मोक्ष का अनुभव करके बौद्ध धर्म आवश्यकताओं पर संयम रखना चाहिए। अस्तित्व के स्वरूपः गौतम बुद्ध ने बताया कि अस्तित्व अनित्य है। उन्होंने मिथ्य किया कि सब कुछ बदल जाता है और हमें मानसिक और भौतिक दुःख से मुक्त होने के लिए अपने आवश्यकताओं को छोड़ना चाहिए।

स्वतंत्रता की मुक्तिः गौतम बुद्ध ने स्वतंत्रता की मुक्ति की महत्वपूर्णता बताई। उन्होंने सिखाया कि हमें अपने आवश्यकताओं और आसक्तियों से मुक्त होना चाहिए और स्वतंत्र जीवन जीने की क्षमता रखनी

की स्थापना की।
चार्यावाद और आठ आर्य
सत्यों: गौतम बुद्ध ने आठ आर्य सत्यों की प्रवृत्ति की, जिनमें दुःख के कारण, दुःख का समाप्ति, निर्दोष जीवन का प्राप्ति और मध्यम मार्ग की अनुयायी जीवन शामिल था। उन्होंने यह सिद्ध किया कि ब्रह्मचर्य, अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह और संयम से जीवन बेहतर और धार्मिक हो सकता है।

चाहिए। ये अनसुनी बातें गौतम बुद्ध के संदेशों और उनके आध्यात्मिक ज्ञान का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो हमें सामग्री और आत्मिक उद्धार की दिशा में प्रेरित करते हैं। गौतम बुद्ध के बारे में उनकी मान्यताएं और सिद्धांतों के आधार पर, वे मानव होते हैं और भगवान नहीं हैं। यह उनके खुद के शिक्षाओं में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। गौतम बुद्ध ने उपनिषदों और वैदिक धर्म के

महापरिनिर्वाणः गौतम बुद्ध का महापरिनिर्वाण उनकी मृत्यु के बाद हुआ, जब उन्होंने कुशिनगार में दुनियावी बंधनों से मुक्त हो जाने का अनुभव किया। उनका महापरिनिर्वाण उनके शिष्यों और अनुयायियों के लिए एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक आदर्श बना। गौतम बुद्ध का जीवन और उनके संदेशों का प्रचार दुनिया भर में व्याप्त हुआ है। उन्होंने मानवता को शार्ति, सम्यक्त्व और सुख के मार्ग पर चलाने की शिक्षा दी। उनकी उपदेशों और आचरणों का पालन करने से लोग अपने जीवन में सुख और समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। गौतम बुद्ध के संबंधित पांच अनसुनी बातें उपनिषद और वादक धन के परंपरागत अवतारावाद के स्थान पर मानवीय समझवाद का विकास किया। उनके उपदेशों में वे खुट को एक मानव मानते हैं और मानवीय दुःख से मुक्ति प्राप्त करने की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। गौतम बुद्ध के अनुयायी उन्हें एक महान आध्यात्मिक गुरु और धर्मसंस्थापक मानते हैं, लेकिन उन्हें भगवान के रूप में नहीं मानते हैं। वे अपने आत्मज्ञान और सत्य के आधार पर जीने वाले एक महान आदमी के रूप में प्रस्तुत होते हैं। उन्होंने धर्म के माध्यम से संसार में सुख और शांति प्रदान करने का प्रयास किया और अनन्त जीवन की प्राप्ति की ओर प्रेरित किया।

बीच जंगल में मौजूद है 99 लाख 99 हजार 999 मूर्तियां, क्या है इनका रहस्य?



— 5 —

उनाकोटि, जिसका अर्थ है एक करोड़ में एक कम, इसका नाम गुफा परिसर के भीतर मौजूद मूर्तियों की विशाल संख्या से लिया गया है। जैसे ही पर्यटक उनाकोटि की गहराई में जाते हैं, उनका स्वावलम्बन एक विस्मयकारी दृश्य-पत्थर की नक्काशी की अंतहीन श्रृंखला से होता है। छोटे से लेकर विशाल आकार तक की मूर्तियाँ गुफा की दीवारों और उसके आसपास के क्षेत्रों को सुशोभित करती हैं। जटिल शिल्प कौशल और मूर्तियों की विशाल संख्या ने सदियों से इतिहासकारों, पुरातत्वविदों और जिज्ञासु आगंतुकों को मोहित किया है। उनाकोटि के सबसे हैरान करने वाले पहलूओं में से एक इसकी उत्पत्ति को लेकर अनिश्चितता है। व्यापक शोध और अन्वेषण के बावजूद, इन मूर्तियों को तराशने वाले कारीगरों की पहचान एक रहस्य बनी हुई है। ऐसे कोई ऐतिहासिक अभिलेख या शिलालेख नहीं हैं जो इनके रचनाकारों पर प्रकाश डालते हों। लिखित खातों या मौखिक परंपराओं की अनुपस्थिति सजिंशा को बढ़ाती है, जिससे हमें उन अज्ञात हाथों के बारे में आशर्चय होता है जिन्होंने कला के इन उल्लेखनीय कार्यों को आकार दिया।

गास्तु के इन आ

क्या आप अक्सर अपने बच्चों को पढ़ाई या आगामी परीक्षाओं के कारण घबराते और तनावग्रस्त पाते हैं? एक या दो बच्चों के साथ ऐसा नहीं है लेकिन दुःख की बात है कि आजकल हर बच्चे के साथ ऐसा होता है और आप कह सकते हैं कि यह सिर्फ पढ़ाई के दबाव के कारण है। हालांकि अगर हम अलग धारणा से बताते हैं तो वास्तु कहता है कि तनाव गलत अध्ययन स्थान का मूल कारण है।

आज अधिकांश बच्चे जिनमें युवा किशोर से लेकर वयस्क तक शामिल हैं, सभी कम या खराब एकाग्रता के साथ चिंता, तनाव और घबराहट से पीड़ित हैं। आपने अक्सर उन्हें यह कहते हुए सुना होगा कि वे चीजों को अधिक समय तक याद नहीं रख सकते। ऐसा ही मामला बच्चों के कमरे में वास्तु दोष का होता है जहां स्टडी टेबल की स्थिति, पढ़ने

A photograph showing a stack of various colored books standing upright on a light-colored wooden desk. A white pencil lies horizontally in front of the books. The background is slightly blurred.

की स्थिति, सोने अपने बच्चे के किसी डर और उज्ज्वल आत्मविश्वास से हैं। बल्कि शिक्षा



पहली का संरक्षण

वास्तु के इन उपायों से करें बच्चों के तनाव को कम

क्या आप अक्सर अपने बच्चों को पढ़ाई या आगामी परीक्षाओं के कारण घबराते और तनावग्रस्त पाते हैं? एक या दो बच्चों के साथ ऐसा नहीं है लेकिन दुःख की बात है कि आजकल हर बच्चे के साथ ऐसा होता है और आप कह सकते हैं कि यह सिर्फ पढ़ाई के दबाव के कारण है। हालांकि अगर हम अलग धारणा से बताते हैं तो वास्तु कहता है कि तनाव गलत अध्ययन स्थान का मूल कारण है।

अन्त अधिकांश बच्चे जिनमें यहा किशोर

की स्थिति, सोने की स्थिति आदि बहुत मायने रखती है। अपने बच्चे को आने वाली परीक्षा के दौरान बिना किसी डर और तनाव के अध्ययन करने दें, कुछ उज्ज्वल वास्तु युक्तियों के साथ जो न केवल उसे आत्मविश्वास से पेपर लिखने के लिए निंदर बनाते हैं बल्कि शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए

एकाग्रता भी बढ़ाते हैं। आज हम अपने खास खबर डॉट कॉम के पाठकों को छात्रों के तनाव को कम करने और एकाग्रता बढ़ाने के लिए कुछ ऐसी वास्तु युक्तियों के बारे में बताने जा रहे हैं जिनके द्वारा आप अपने बच्चे का तनाव कम कर सकते हैं—

1. बच्चों को उत्तर/पूर्व या पश्चिम में कमरा देना चाहिए।
2. बच्चे को अपना सिर दक्षिण या पूर्व की ओर करके सोना चाहिए।

उत्तर की ओर सिर करके सोने से बचें तर या पूर्व की ओर मुह करके पढ़ाई कर डी टेबल को रही सामग्री या अप्रासंगिक वस्तु-व्यस्त न करें। अपने आस-पास ऊर्जा देने के लिए इसे साफ रखें। बच्चे में कुछ जल स्रोत जैसे फिश

एकवेरियम या पानी का फव्वारा रखें।

6. पढ़ाई करते समय हमेशा स्टडी टेबल के सामने पानी से भरा गिलास रखें क्योंकि इससे एकाग्रता बढ़ती है।

7. उत्तर दिशा की दीवार पर लगी पेंडुलम घडियां भी एकाग्रता बढ़ाती हैं।

8. स्टडी टेबल का आकार नियमित होना चाहिए।

9. स्टडी टेबल दीवार से सटी नहीं होनी चाहिए। दीवार और टेबल के बीच कम से कम 3 इंच की जगह छोड़ दें।

10. स्टडी टेबल के ऊपर ओवरहेड स्ट्रोरेज रखने से बचें।

11. बच्चों के कमरे में किसी भी तरह के इलेक्ट्रॉनिक सामान से दूर रहें। यदि वे मौजूद हैं, तो उपयोग में न होने पर उन्हें मुख्य स्थिति से बंद करने का प्रयास करें।

12. सूरजमुखी के पीले रंग की कोई भी वस्तु रखें, इससे समग्र ग्रहण शक्ति और बुद्धि में बृद्धि होती है।

कभी करती थीं लीड रोल, अब निभा रहीं मां के किरदार, छलका एक्ट्रेस का दर्द

मनीषा कोइराला 90 के दशक की टॉप एक्ट्रेस रही हैं। उन्होंने कई हिट फिल्में दी हैं। कैसर से जंग जीतने के बाद उन्होंने 'डियर माया', 'लस्ट स्टोरी', 'संचू', 'प्रस्थानम' जैसी फिल्मों में काम किया। संजू के लिए उनकी अदाकारी को खूब सराहा गया। वह दिवंगत एक्ट्रेस नरगिस और संजय दत्त की मां के किरदार में दिखी थीं। इस साल रिलीज हुए फिल्म 'शहजादा' में भी उन्होंने कार्तिक की मां का किरदार निभाया। कभी फिल्मों में लीड रोल निभाने वाली एक्ट्रेस को अब मां के किरदार में दिखाया गया। इस पर उन्होंने थोड़ा दुख भी जताया और इसे स्वीकार भी कर रही हैं।

मनीषा कोइराला ने कहा कि लीड एक्ट्रेस कैरियर रोल तक का बदलाव उनके लिए कठिन था। लेकिन बढ़ती उम्र के साथ किसी फिल्म में सेटर ऑफ अट्रेशन नहीं बनने पर उन्हें शार्टी भी रहने वाले एक्ट्रेस को अब मां के किरदार में दिखाया गया। इस पर उन्होंने थोड़ा दुख भी जताया और इसे स्वीकार भी कर रही हैं।



लगी है। ईटाइम्स को दिए इंटरव्यू में मनीषा ने इस बारे में बात की। मनीषा ने कहा कि उन्होंने कार्तिक की मां का किरदार निभाया क्योंकि वह अंगीर रोल निभाने के बाद एक कमर्शियल ड्रामा में एक्टिंग करना चाहती थीं। मनीषा कोइराला ने दुख जताते हुए स्वीकार किया कि जब कोई जब कोई लीड एक्ट्रेस की भूमिका निभाता है, तो पूरी दुनिया उनके चारों ओर घूमती है, लेकिन जब कैरियर रोल निभाना शुरू करते हैं तो पूरा सेटअप बदल जाता है। इससे उन्हें थोड़ा दुख हुआ और ये भी एहसास हुआ कि बवत आगे बढ़ गया है। उनके पास पहला

हुए स्वीकार किया कि जब कोई जब कोई लीड एक्ट्रेस की भूमिका निभाता है, तो पूरी दुनिया उनके चारों ओर घूमती है, लेकिन जब कैरियर रोल निभाना शुरू करते हैं तो पूरा सेटअप बदल जाता है। इससे उन्हें थोड़ा दुख हुआ और ये भी एहसास हुआ कि बवत आगे बढ़ गया है। उनके पास पहला

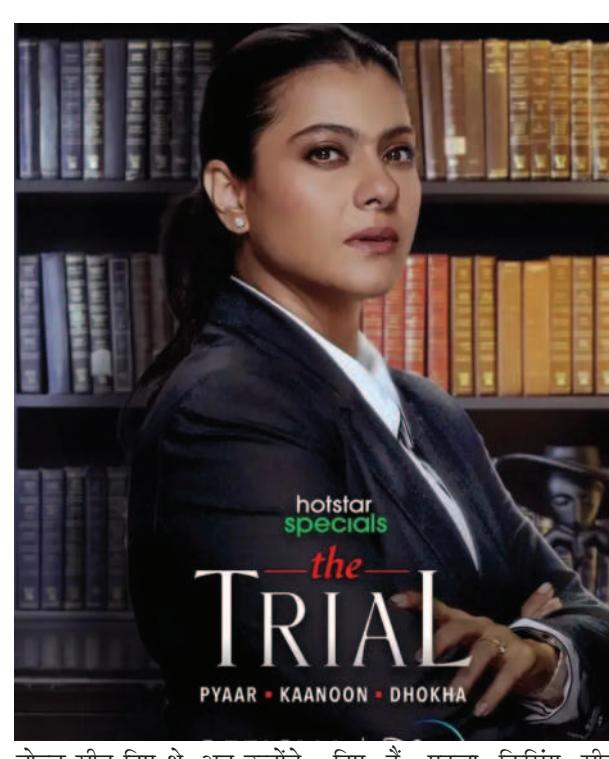
जितना स्टारडम नहीं है, नई एक्ट्रेसेज आ गई हैं। मनीषा कोइराला का कहना है कि उन्हें जो भी रोल ऑफर किए जा रहे हैं, वह उसमें अपना पूरा 100 प्रतिशत योगदान दे रही है। उन्होंने ये भी कहा कि उन्हें जो भी रोल ऑफर हो रहे हैं, वो उन्हें कर रही हैं क्योंकि जब किसी की उम्र बढ़ने लगती है, तो सेटर ऑफ अट्रेशन से दूर रहना सीख जाता है। यानी वह धीरे-धीरे खुद ही किनारे होने लगता है।

'शहजादा' में कृति कैनन वीं लीड एक्ट्रेस एक्ट्रेस और कार्तिक आर्यन लीड हीरो थे। फिल्म को उन्होंने अपनी परफॉर्म हुई। कार्तिक आर्यन का जादू भी फिल्म को नहीं बचा सका। 'शहजादा' अल्लू अर्जुन की तेलु फिल्म 'अला वैकृथपुमुलु' की आफिशियल हिंदी रीमेक थी।

बलीबुद की चुलबुली एक्ट्रेस काजोल को इंडस्ट्री में 30 साल से ज्यादा का समय हो चुका है और वह अब तक इंडस्ट्री का कई हिट फिल्में दे चुकी हैं। काजोल इन दिनों अपनी दब्ब्य वेब सीरीज 'द द्रायल' को लेकर सुर्खियों में है, जिसमें वह एक वकील की भूमिका में है। इस वेब सीरीज के लिए एक्ट्रेस ने कुछ ऐसा किया है, जो उन्होंने 29 सालों से नहीं किया था। एक्ट्रेस ने इस वेब सीरीज के लिए अपने 29 साल पुराना बनाया अपना खुद का रूल तोड़ दिया है। जी हाँ, एक्ट्रेस ने 48 की उम्र में 'द द्रायल' में किसिंग सीन देकर फैस के बीच तहलका मचा दिया है। वह भी एक नहीं दो-दो एक्टर्स के साथ।

अब तक बोल्ड सीन से दूर रहने वाली काजोल ने 48 साल की उम्र में अपनी वेब सीरीज द्वारा यहां में किसिंग सीन दिए हैं। इससे पहले उन्होंने 'लस्ट स्टोरीज' 2' में भी क्रमुद मिश्रा के साथ वेब सीरीज में दो किसिंग सीन उन्होंने सीरीज में अपने बॉयफ्रेंड

काजोल ने तोड़ा वो रुल, जिस पर उन्हें था नाज 29 साल बाद अपने ही बनाए नियम से मोड़ा मुंह



की भूमिका निभा रहे अली खान के साथ किसिंग सीन दिया है और दूसरा को समय हो चुका है और वह अब तक इंडस्ट्री में रही है।

वेब सीरीज में काजोल के दिए किसिंग सीन अब बायरल हो रहे हैं और खूब सुर्खियां बटोर रहे हैं। एक्ट्रेस के फैस भी उनके इस कदम से काफी हैरान लग रहे हैं। कई यूजर्स ने द द्रायल से काजोल के किसिंग सीन के बिल्पे शेयर किए हैं और इस पर प्रतिक्रिया दी है। काजोल, अली खान, जीशू सेन गुप्ता और कुत्रा सैन स्टारर वेब सीरीज 'द गुड वाइफ' का रिमेक है, जिसके मूल शो में ज़्यादातर मार्गिल्स लीड रोल में थीं। द द्रायल से पहले शो के साउथ कोरियाई और जापानी रीमेक पहले ही आ चुके हैं और अब इसका हिंदी वर्जन सुर्खियों में है।

संजय दत्त की एक गलती...और आदित्य पंचोली बन गए स्टार



संजय दत्त ने यूं तो महेश भट्ट की 'सड़क', 'गुमराह' जैसी कई यादगार फिल्मों में काम किया है, लेकिन वे 30 साल पहले महेश भट्ट की एक बात मान लेते, तो उनके किरदार रेत में चार चांद लग जाते। दरअसल, संजय दत्त की बड़ी चूक के चलते एक शानदार मूवी उनके हाथ से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई थीं, जिनमें से एक थीं- 'साथी' जो 20 सितंबर 1991 को रिलीज हुई थी। फिल्म की कहानी अपनी यादगारी के अलावा एक बात भी थी कि उसने आदित्य पंचोली को अल्प से निकल गई थी, जिसने आदित्य पंचोली को स्टार बनाया था। महेश भट्ट ने 90 के दौर में कुछ बेहतरीन फिल्में

यूरिक एसिड पर असरदार है छीटग्रास जूस

आज की भागवाड़ भरी जिंदगी और खानबाजार के चलते कम उम्र में ही लाग कई गंभीर बीमारियों की चेष्ट में आ रहे हैं। इन्हीं में से एक है हाई यूरिक एसिड की समस्या। बीते कुछ समय से इसके मामले अधिक देखने को मिल रहे हैं। यूरिक एसिड एक टॉक्सिन है जो खाने के पचने के बाद लिवर, इंस्ट्राइन और वैस्क्लर एंडोथ्रेलियल से बनता है। वहीं, वैसे तो किंडनी इन टॉक्सिन को फिल्टर कर टॉक्सेट के रखने बांडी से बाहर निकाल देती है। हालांकि, अधिक मात्रा में होने पर ये क्रिस्टल के रूप में हाइड्रोयों में जमा होने लगता है। इसके चलते हाइड्रोयों कमज़ोर होती है और व्यक्ति को हाथ-पैर की उंगलियों, अंगूठे, घुटनों में तेज दर्द का असरसाथ होता है।

इतना ही नहीं, इसके अलावा ये किंडनी पर भी बेद खानबाजार असर डालता है। साथ ही ये समस्या कैसे-



यूरिक एसिड पर असरदार है छीटग्रास जूस

जी हां, छीटग्रास जूस हाई यूरिक एसिड की समस्या से छुटकारा पाने में आपकी मदद कर सकता है। इस जूस में एजाइम, मैग्नीशियम, कैल्शियम, विटामिन बी, ए, के, सी, ई और प्रोटीन समेत कई ऐसे पोषक तत्व पाए जाते हैं जो हाई यूरिक एसिड की

समस्या में बहुत काफ़ादेंद महोत्तेह हैं। छीटग्रास का जूस इम्प्रिन्टी को बूस्ट कर, खन में अल्कालिनिटी को बापस लाने में मदद करता है। इसके अलावा ये जोड़ी में जमा हाई यूरिक एसिड के क्रिस्टल को मिलाकर पेशेवर के रास्ते बाहर निकालने में भी असरदार सांवित हो सकता है।

कैसे तैयार करें छीटग्रास का जूस

मूँ तो छीटग्रास का जूस बाजारों में भी उपलब्ध है। हालांकि, यहां हम आपने इसे घर पर बनाकर पीने की सलाह दें। ऐसे में एनीमिया की समस्या से जूड़ा रहे लोगों को इस जूस का सेवन जरूर करना चाहिए। ये गैस, कब्ज़, अपच जैसी पाचन संबंधी समस्याओं को रोकने में भी मददगार सांवित हो सकता है। आप चांपे तो इस जूस को प्रोतीन में ठंडा कर भी पी सकते हैं या इसे बनाने के लिए ठंडे पानी का इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

पीढ़ के निघले हिस्से में दर्द ने कर दिया है जीना मुश्किल? बस लेटे-लेटे कर लें ये योगासन

आज के समय में

अधिकतर लोग

सिटिंग जॉब में 8

से 9 घंटे एक ही

जगह बैठें-बैठें

बिताते हैं। इसके

चलते धीरे-

धीरे उठते कई

स्वच्छ

व्यायामों को कम करने में

मददगार सांवित होता है।

ब्रेन की बैठक के लिए है

बेहतर

ओमेगा-3 फैटी एसिड से

भरपूर इस फैट को ब्रेन फैट

भी कहा जाता है। अध्ययनों

से पता चलता है कि वे

संज्ञानात्मक प्रदर्शन को

बेहतर करने और उम्र बढ़ने

पर दिमारी क्षमता में होने

मददगार सांवित होता है।

ब्रेन घटाने में ही असरदार

अखरोट एक ऐसा ड्राइफ्रूट है जो पोषक

तत्वों का पारवाहात्स है। अखरोट का सेवन सेहत के लिए बेद फायदेमंद है। अखरोट का इस्तेमाल हम ड्राइफ्रूट के रूप में और मिट्टर्यों का स्वाद बढ़ाने में करते हैं। एंटीऑक्सिडेंट, फाइबर और हेल्दी वसा से भरपूर ये नदस बेद स्वादिष्ट होता है। मदरहुड हार्स्टिट्स बैंगलूरु एचआरबीआर लेआर में कस्टर्सेट डायर्टिंग्यूशियन अंजना बी नायर ने बताया ने बताया ने सहरे सेहत में बेद बढ़ाने और ब्रेन फैट को कम करने में बेद दर्द करता है। ये हमारे दिल को सेहत में बेद दर्द रखने के साथ ही हमारे मस्तिष्क को भी हेल्दी रखता है। बजन को कंट्रोल करने के लिए अखरोट का सेवन बेद असरदार सांवित होता है। जिन लोगों का लड्ड

अखरोट एक ऐसा ड्राइफ्रूट है जो पोषक

तत्वों का पारवाहात्स है। अखरोट का सेवन सेहत के लिए बेद फायदेमंद है। आइए एक्सपर्ट से जानते हैं कि पोषक तत्वों से भरपूर ये ड्राइफ्रूट कैसे सेहत के लिए फायदेमंद है।

दिल की सेहत के लिए है फायदेमंद

अखरोट ओमेगा-3 फैटी एसिड से भरपूर

होता है, जो दिल के खरों को कम

करता है। इसका सेवन करने से शरीर में सुधार होता है और बांडी में सुजन कम

होता है। ये सभी पोषक तत्व तेज सेहत के लिए बेद फायदेमंद होते हैं। आइए एक्सपर्ट से जानते हैं कि पोषक तत्वों से भरपूर ये ड्राइफ्रूट कैसे सेहत के लिए फायदेमंद है।

एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों से है भरपूर

एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों से भरपूर अखरोट का सेवन करने से पुरानी सूजन दूर होती है और दिल को सेहत दुरुस्त रहती है। डायर्टीजी से लेकर कैर्सर जैसे बीमारियों को दूर करने के लिए ये ड्राइफ्रूट बेद असरदार सांवित होता है। अब कोहनियों को जमीन पर रखें और कंधों को ऊपर की तरफ ले जाएं। इसके बाद दोनों हाथों को सिर के पास से ले जाए हुए साथ खोल लें। अब कोहनियों को जमीन पर रखें और कंधों को ऊपर की तरफ ले जाएं। हथेलियों का स्टैंड (कप के आकार) बनाकर इस पर ढुकी को रख लें।

सेहत पर जहर की तरह करते हैं असर

जूस



जी20: 'भारत-अमेरिका की साझेदारी दुनिया में सकारात्मक बदलाव लाएगी'

जाने पीएम मोदी पर क्या बोलीं वित्तमंत्री

नई दिल्ली, 17 जुलाई (एजेंसियां)। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्भासी सोना गुजरात के गढ़ीनगर में जी-20 से जुड़े एक कार्यक्रम के दौरान वैश्विक स्तर पर भारत और अमेरिका की भागदारी पर चर्चा की। उन्होंने कहा, साझा लोकतांत्रिक मूल्यों बदलाव और नियम-आधारित वैश्विक व्यवस्था व बहुपक्षवाद के लिए एक मजबूत प्रतिबद्धता के साथ, भारत और अमेरिका रचनात्मक बातों में संरक्षण के लिए जुटे हुए हैं। उन्होंने कहा, हमारी मजबूत साझेदारी प्रगति व समृद्धि की क्षमता का उपयोग करने के लिए हमारी पारस्परिक प्रतिबद्धता को दर्शाती है। पिछले महीने पीएम मोदी की अमेरिका की राजकीय



सहयोग के नए रास्ते खोलने का मार्ग प्रस्तुत किया और हमारी साझेदारी को एक नई ऊर्जा की तरफ पहुंचाया। उन्होंने कहा, जब हम आगे की ओर देख रहे हैं, हम करीबी सार्पक के साथ से ठोस परिणाम हासिल करने की अपनी (भारत-अमेरिका) प्रतिबद्धता की फिर से पुष्टि करते हैं। एक-दूसरे की वैशेषिकता और सासाधनों का लाभ उठाकर, हम सक्रिय रूप से अधिक वित्त विकास, तेजी से नवाचार को बढ़ावा देते हैं और सतत विकास को चलाते हैं। हमारी साझेदारी एक समझ और न्यायसंत भवित्व का निर्माण करेगी, जिससे यह दुनिया भर में सकारात्मक बदलाव के लिए उत्प्रेरक बन जाएगी।

आरबीआई : क्रेडिट कार्ड से रिकॉर्ड 1.4 लाख करोड रुप्य खर्च

वेबसाइट पर अपना लोगो और क्यूआर कोड प्रदर्शित करें बैंक

नई दिल्ली, 17 जुलाई (एजेंसियां)। क्रेडिट कार्ड से खर्च मई, 2023 में मासिक आधार पर 5 फीसदी बढ़कर रिकॉर्ड 1.40 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया। इस दौरान इस्टेमाल क्रेडिट कार्ड की संख्या ने अपने लाख से ज्यादा बढ़कर 50 लाख से ज्यादा बढ़कर 8,74 करोड़ पहुंच गई। वहीं, जमा बीमा एवं ब्रॉन्ट गारंटी नियम (डीआईसीजीसी) ने सभी बैंकों से 31 अगस्त तक अपनी वेबसाइट व इंटर्नेट बैंकिंग पोर्टल पर एक समझौता से अपनी बैंकों पर एक समझौता से अपनी बैंकों को बढ़ावा देते हैं। उन्होंने कहा, यह एक समझौता है।



चाल वित्त वर्ष के पहले दो माह में ही हुआ है। जनवरी में देश में 8.24 करोड़ सक्रिय क्रेडिट कार्ड थे। फरवरी में यह संख्या 8.33 करोड़, मार्च में 8.53 करोड़ और अप्रैल में 8.65 करोड़ पहुंच गई। अंकड़ों के मुताबिक, क्रेडिट कार्ड से खर्च 2022-23 में पूरे साल के दौरान 1.1-1.2 लाख करोड़ रुपये रहा।

जाने कौन बैंक किस नंबर पर

एचडीएफसी बैंक के मई में

संख्या ज्यादा 1.81 करोड़ क्रेडिट कार्ड चलने में थे। इस पर बकाया के मामले में 28.5 फीसदी हिस्सेदारी के साथ बैंक शीर्ष पर रहा। दूसरे स्थान पर काविज एस्प्रोआई कार्ड के 1.71 करोड़ क्रेडिट कार्ड इस्टेमाल में थे। वहीं, आरबीआईसीजीसी बैंक शीर्ष पर रहा। दूसरे स्थान पर काविज एस्प्रोआई कार्ड के साथ चौथे स्थान पर था।

वेबसाइट पर अपना लोगो और क्यूआर कोड प्रदर्शित करें बैंक

आरबीआई की अनुषंगी कंपनी ने परिपत्र में कहा, जमा बीमा विशेष रूप से छोटे जमकातों और बैंकों की सुरक्षा करने, बैंकिंग प्रणाली में भरोसा पैदा करने व वित्तीय बैंकों की डीआईसीजीसी करता है।

वेबसाइट पर अपना लोगो और क्यूआर कोड प्रदर्शित करें बैंक

आरबीआई की अनुषंगी कंपनी ने परिपत्र में कहा, जमा बीमा विशेष रूप से छोटे जमकातों और बैंकों की सुरक्षा करने, बैंकिंग प्रणाली में भरोसा पैदा करने व वित्तीय बैंकों की डीआईसीजीसी करता है।

वेबसाइट पर अपना लोगो और क्यूआर कोड प्रदर्शित करें बैंक

आरबीआई की अनुषंगी कंपनी ने परिपत्र में कहा, जमा बीमा विशेष रूप से छोटे जमकातों और बैंकों की सुरक्षा करने, बैंकिंग प्रणाली में भरोसा पैदा करने व वित्तीय बैंकों की डीआईसीजीसी करता है।

विश्लेषण: बीमा क्षेत्र को बदल देगा संशोधित विधेयक

आर्थिक विकास को बढ़ावा और बड़े स्तर पर सूजित होंगे रोजगार

नई दिल्ली, 17 जुलाई (एजेंसियां)। अब जबकि संसद का मानसून सत्र आ चला है, कई विधेयकों पर सभी की नजर है, जिनमें कुछ ऐसे भी हैं, जो आर्थिक, वित्तीय और वैश्विक संरक्षण के बारे में राजनीति हो रही है। इनमें एक ऐसा विधेयक है, जिसे सुधारवादी ही नहीं, रोजगार प्रेरणा का बाबा है। यह बीमा कानून (संशोधन) विधेयक है और पारित होने पर यह गेम चेंजर तरह हो सकता है। इसके पारित होने पर बड़े पैमाने पर रोजगार के रास्ते खुलें और निवेश भी बढ़ेगा। इसे इसी स्तर में रखा जाएगा और लोकसभा में सतारूढ़ दल का बहुमत होने के कारण इसका पारित होना तय ही है। उम्मीद है कि इसे राजसभा में भी पारित होने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी। यह विधेयक 1938 में बने बीमा कानून में संशोधन तो करेगा ही, 1999 के बीमा नियमक और विकास का प्राथिकरण कानून में भी बदलाव लाएगा। यह बीमा कानून तो करेगा ही, 2023-24 की प्राइस सपोर्ट स्ट्राईकर के साथ और मंग्रेज दल की बाबा है। इसके पारित होने के बाद रोजगार के रास्ते खुलें और निवेश भी बढ़ेगा। इसे इसी स्तर में रखा जाएगा और लोकसभा के बाबा होने के कारण इसका पारित होना तय ही है। उम्मीद है कि इसे राजसभा में भी पारित होने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी। यह विधेयक 1938 में बने बीमा कानून में संशोधन तो करेगा ही, 1999 के बीमा नियमक और विकास का प्राथिकरण कानून में भी बदलाव लाएगा। यह बीमा कानून तो करेगा ही, 2023-24 की प्राइस सपोर्ट स्ट्राईकर के साथ और मंग्रेज दल की बाबा है। इसके पारित होने के बाद रोजगार के रास्ते खुलें और निवेश भी बढ़ेगा। इसे इसी स्तर में रखा जाएगा और लोकसभा के बाबा होने के कारण इसका पारित होना तय ही है। उम्मीद है कि इसे राजसभा में भी पारित होने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी। यह विधेयक 1938 में बने बीमा कानून में संशोधन तो करेगा ही, 1999 के बीमा नियमक और विकास का प्राथिकरण कानून में भी बदलाव लाएगा। यह बीमा कानून तो करेगा ही, 2023-24 की प्राइस सपोर्ट स्ट्राईकर के साथ और मंग्रेज दल की बाबा है। इसके पारित होने के बाद रोजगार के रास्ते खुलें और निवेश भी बढ़ेगा। इसे इसी स्तर में रखा जाएगा और लोकसभा के बाबा होने के कारण इसका पारित होना तय ही है। उम्मीद है कि इसे राजसभा में भी पारित होने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी। यह विधेयक 1938 में बने बीमा कानून में संशोधन तो करेगा ही, 1999 के बीमा नियमक और विकास का प्राथिकरण कानून में भी बदलाव लाएगा। यह बीमा कानून तो करेगा ही, 2023-24 की प्राइस सपोर्ट स्ट्राईकर के साथ और मंग्रेज दल की बाबा है। इसके पारित होने के बाद रोजगार के रास्ते खुलें और निवेश भी बढ़ेगा। इसे इसी स्तर में रखा जाएगा और लोकसभा के बाबा होने के कारण इसका पारित होना तय ही है। उम्मीद है कि इसे राजसभा में भी पारित होने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी। यह विधेयक 1938 में बने बीमा कानून में संशोधन तो करेगा ही, 1999 के बीमा नियमक और विकास का प्राथिकरण कानून में भी बदलाव लाएगा। यह बीमा कानून तो करेगा ही, 2023-24 की प्राइस सपोर्ट स्ट्राईकर के साथ और मंग्रेज दल की बाबा है। इसके पारित होने के बाद रोजगार के रास्ते खुलें और निवेश भी बढ़ेगा। इसे इसी स्तर में रखा जाएगा और लोकसभा के बाबा होने के कारण इसका पारित होना तय ही है। उम्मीद है कि इसे राजसभा में भी पारित होने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी। यह विधेयक 1938 में बने बीमा कानून में संशोधन तो करेगा ही, 1999 के बीमा नियमक और विकास का प्राथिकरण कानून में भी बदलाव लाएगा। यह बीमा कानून तो करेगा ही, 2023-24 की प्राइस सपोर्ट स्ट्राईकर के साथ और मंग्रेज दल की बाबा है। इसके पारित होने के बाद रोजगार के रास्ते खुलें और निवेश भी बढ़ेगा। इसे इसी स्तर में रखा जाएगा और लोकसभा के बाबा होने के कारण इसका पारित होना तय ही है। उम्मीद है कि इसे राजसभा में भी पारित होने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी। यह विधेयक 1938 में बने बीमा कानून में संशोधन तो करेगा ही, 1999 के बीमा नियमक और विकास का प्राथिकरण कानून में भी बदलाव लाएगा। यह बीमा कानून तो करेगा ही, 2023-24 की प्राइस सपोर्ट स्ट्राईकर के साथ और मंग्रेज दल की बाबा है। इसके पारित होने के बाद रोजगार के रास्ते खुलें और निवेश भी बढ़ेगा। इसे इसी स्तर में रखा जाएगा और लोकसभा के बाबा होने के कारण इसका पारित होना तय ही है। उम्मीद है कि इसे राजसभा में भी पारित होने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी। यह विधेयक 1938 में बने बीमा कानून में संशोधन तो करेगा ही, 1999 के बीमा नियमक और विकास का प्राथिकरण कानून में भी बदलाव लाएगा। यह बीमा कानून तो करेगा ही, 2023-24 की प्राइस सपोर्ट स्ट्राईकर के साथ और मंग्रेज दल की बाबा है। इसके पारित होने के बाद रोजगार के रास्ते खुलें और निवेश भी बढ़ेगा। इसे इसी स्तर में रखा जाएगा और लोकसभा के बाबा होने के कारण इसका पारित होना तय ही है। उम्मीद है कि इसे राजसभा में भी पारित होने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी। यह विधेयक 1938 में बने बीमा कानून में संशोधन तो करेगा ही, 1999 के बीमा नियमक और विकास का प्राथिकरण कानून में भी बदलाव लाएगा। यह बीमा कानून तो करेगा ही, 2023-24 की प्राइस सपोर्ट स्ट्राईकर के साथ और मंग्रेज दल की बाबा है। इसके पारित होने के बाद रोजगार के रास्ते खुलें और निवेश भी बढ़ेगा। इसे इसी स्तर में रखा जाएगा

मिधानि में हिंदी कार्यशाला संपन्न



हैदराबाद, 17 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। रक्षा मंत्रालय के उपक्रम मिशन धर्म निपाम लिमिटेड (मिधानि) में मिधानि की राजभाषा कार्यव्यवस्था को लिए एक पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह अप्रथम सत्र में दक्षिण केंद्र रेलवे को वरिष्ठ अनुबाद अधिकारी डॉ. राजी निरोश काटे ने राजभाषा के रूप में हिंदी का चयन एवं कार्यव्यवस्था पर व्याख्यान दिया।

उन्होंने अपने व्याख्यान के लिए एक पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह अप्रथम सत्र में दक्षिण केंद्र रेलवे को वरिष्ठ अनुबाद अधिकारी डॉ. राजी निरोश काटे ने बताया कि हिंदी भारतीय जनता में हिंदी का चयन के अधिकारी पर व्याख्यान सत्र कर, भावावनी विषय पर व्याख्यान दिया।

